International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 8, 488-490
Aug 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979 Impact Factor: 3.762

कल्पना
शोधार्थी, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Correspondence
कल्पना
शोधार्थी, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

रीतिकालीन कवि मतिराम का काव्य-सौन्दर्य

कल्पना

शोध-सार
कवि मतिराम रीतिकाल की रीतिबद्ध धारा के प्रमुख कवियों में से एक हैं, जिन्होंने दरबार में रहते हुए भी जीवन के सार्वभौमिक भावों का चित्रण किया है | इनकी रचना की मुख्य विशेषता यह है कि उनकी भाषा शब्दाडंबर से एवं भाव कृत्रिमता से सर्वथा मुक्त हैं | रीतिकाल के समय में ब्रजभाषा एक लोकप्रिय और प्रभावशाली भाषा बनी हुई थी जिसके चलते मतिराम ने भी अपने काव्य में ब्रजभाषा को अपनाया | इनकी भाषा में लालित्य और स्वाभाविकता का प्रभाव दृष्टिगत होता है | इनके काव्य में भावों की सुकुमारता है | मतिराम ने शब्द विशेष के माध्यम से भावों के सौन्दर्य को प्रकट करने की क्षमता का परिचय दिया है | इनके काव्य में स्त्री की कोमल भावनाओं को स्थान दिया गया हैं। उनकी अलंकार योजना अनुभूति को स्पर्श करने वाली है | इनके चित्रण व्यक्ति वस्तु और भाव को सजीव रूप से प्रस्तुत करने की विशेषता रखते हैं |

मुख्य शब्द:- मध्यकाल, श्रृंगार रस, रीतिकाल, कवि मतिराम, साहित्य का इतिहास, काव्य-सौन्दर्य

मुख्य शोध-पत्र:-
रीतिकाल का समय संवत् 1700 – 1900 [1] माना जाता है। यह हिंदी साहित्य के इतिहास का वह कालखण्ड है जिसमें स्त्री को केंद्र मे रखकर काव्य रचना की गई। नारी का नख-शिख, नायिका-भेद वर्णन रीतिकालीन साहित्य में भरपूर मात्रा में किया गया। इस नारी केंद्रित साहित्य में स्त्री जीवन के सार्वभौमिक भावों का चित्रण किया गया है | इसमें स्त्री की कोमल भावनाओं को स्थान दिया गया हैं। इससे पहले या बाद के साहित्य में ऐसा चित्रण नहीं मिलता है। वह नारी जो साधना मार्ग में बाधा थी, नरक का द्वार मानी गई उसके चित्रण के कारण ही रीतिकालीन साहित्य को ज्यादातर लोगों ने मानव मूल्यों का पतनशील काव्य कहा है | आलोचक इस काव्य को सिरे से ख़ारिज करने के लिए इस पर लगातार आरोपों की वर्षा करते रहे हैं कि इस साहित्य में अश्लीलता, अनैतिक एवं अन-औचित्यपूर्ण जैसी चीजों का वर्णन किया है, परन्तु ऐसा नहीं है | आरोप लगाने वाले लोगों ने पहले ही अपनी दृष्टि में रीतिकालीन साहित्य के प्रति इन दोषों को बिठा लिया हैं और इसी आधार पर इसका अध्ययन किया है | जिसके चलते उन्हें सिर्फ दोष ही दिखाई देते हैं | रीतिकालीन साहित्य का अध्ययन दोष रहित दृष्टि से करने की आवश्यकता है | ताकि इस साहित्य के सकारात्मक पक्षों को सामने लाया जा सके।
रीतिकाल का उदय उस युग में हुआ जब राजनीतिक दृष्टि से मुगल सत्ता भारत की केंद्रीय सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित थी, छोटे रजवाड़ों पर नियन्त्रण होने के कारण युद्ध प्राय: नहीं हो रहे थे | सत्ता का चरित्र आदिकाल की तरह शोषण पर आधारित था दरबारी परिवेश होने के कारण रीतिकाल के साहित्य में शृंगार कविता के केंद्र में है | किंतु ऐसा नहीं है कि शृंगार रस की कविताएँ सिर्फ दरबार की विलासिता प्रकट करने के लिए ही लिखी गई हो | इसके माध्यम से कवियों ने दरबार का मनोरंजन करते हुए पारिवारिक जीवन का भी चित्रण किया हैं | इन कवियों ने तत्कालीन समाज को अपने काव्य के माध्यम से बताया, समाज में नारी की हैसियत को दर्शाया है। मतिराम, पद्माकर तथा अन्य रीतिकालीन कवियों ने स्त्री की दशा का मनोवैज्ञानिक, सामाजिक पक्ष प्रस्तुत किया है | यह ठीक है कि यह कवि स्त्री के शृंगार पक्ष की बात करते हैं पर उस समाज में उस उपेक्षित आधे समाज के लिए इनका इतना भी योगदान कम नहीं आंका जा सकता। मध्यकालीन सौन्दर्य बोध में किसी स्त्री को तब सुन्दर माना जाता था जब उसका रंग गोरा हो | गोरा रंग सामंती सौन्दर्य बोध का लक्षण है | साँवली लड़की भी सुन्दर होती है यह बात आधुनिक युग के सौन्दर्य बोध से उपजी है | इसका अर्थ यह है कि सौन्दर्य के पैमाने समय के साथ-साथ बदलते रहते हैं |
मतिराम रीतिकाल की रीतिबद्ध धारा के प्रमुख कवियों में से है | हिन्दी रीतिकालीन आचार्यों में जिनकी प्रवृति काव्यशास्त्र के गंभीर प्रसंगों के साथ–साथ सरलता और सहजता की और रही है ऐसे कवियों में मतिराम का स्थान प्रमुख है | इनका जन्म – संवत् 1674 के लगभग तिकवापुर (जिला - कानपुर) में हुआ और इनका जीवन काल लम्बा रहा | ये बूंदी महाराज भावसिंह तथा महाराज शम्भुनाथ सोलंकी के आश्रय में रहे |
इनकी रचनाएँ - रसराज, ललितललाम, छन्दसार, फुल-मंजरी, अंलकार पंचाशिका, साहित्यसार, लक्षण श्रृंगार, वृत कौमुदी मतिराम सतसई आदि हैं | जिनमें से वृत्त कौमुदी जैसी रचना अन्य मतिराम नामक कवि की भी बताई जाती है | मतिराम की रचना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसकी सरलता अत्यंत स्वाभाविक है, न तो उसमें भावों की कृत्रिमता है, न भाषा की | भाषा शब्दाडंबर से सर्वथा मुक्त है | केवल अलंकार के चमत्कार के लिए अशक्त शब्दों की भर्ती कहीं नहीं है | जितने शब्द और वाक्य हैं,

[1] हिन्दी साहित्य का इतिहास (रामचंद्र शुक्ल), पृष्ट संख्या 180

वे सब भावव्यंजना से ही प्रयुक्त हैं | रीतिग्रंथवाले कवियों में इस प्रकार की स्वच्छ, चलती और स्वाभाविक भाषा कम कवियों में ही मिलती है, भाषा के ही सामान मतिराम के न तो भाव कृत्रिम हैं और न ही उनके व्यंजक व्यापार और चेष्ठाएँ | [2]

मतिराम का स्थान रीतिकालीन कवियों में भाव चित्रण की दृष्टि से अत्यंत प्रतिष्ठित है | भावों के आधार पर ही इन्होंने नायिका – भेद प्रस्तुत किये हैं - स्वकीया, परकीया और गणिका | स्वकीया के तीन भेद हैं - मुग्धा – जो रसपूर्ण बातें तो करती है परन्तु रतिक्रीडा से भयभीत होती है | मध्या – जो लज्जा तो करती है परन्तु उसका मन रतिक्रीडा करना चाहता है | प्रौढ़ा – जो प्रिय के साथ खुलकर रतिक्रीडा करती है | यह भेद स्त्री की मन:स्थितियों, इच्छाओं, चेष्ठाओं और व्यवहारों के आधार पर किये गए हैं | मतिराम तथा अन्य रीतिकालीन कवियों ने अपने काव्य में गणिका को भी स्थान दिया है | जबकि रीतिकाल से इतर साहित्य में इसे नायिका का स्थान नहीं दिया गया है | ये (मतिराम) रीतिग्रंथकार थे। इन्होंने लक्षण और उदाहरण दोनों दिए हैं जिनमें लक्षण संस्कृत काव्यशास्त्र से लिए है और उदाहरण स्वरचित हैं। वे आचार्य होने के साथ–साथ एक कवि भी थे जिसके चलते इन्होंने मानव के भाव चित्रों का अत्यंत सहज, समाज-प्रचलित एवं काव्योचित चित्रण अपनी कविता में किया है | कोमल भावों के लिए माधुर्य गुण और कठोर भावों के लिए ओज गुण को अपने काव्य में स्थान दिया है | मतिराम का काव्य मुख्यतया माधुर्य गुण से परिपूर्ण है | इन्होंने जो प्रशस्ति काव्य लिखा है, उसमें भी दानवीरता का ही अधिक उल्लेख है, युध्दों का वर्णन प्राय: नहीं सा है | अत: इनका प्रशस्ति काव्य भी माधुर्य गुण से ही परिपूर्ण है |

जो नकारात्मक धारणा मध्यकालीन युग के बारे में है वही रीतिकालीन साहित्य के बारे में भी बनी हुई है | रीतिकाल के समय में ब्रजभाषा एक लोकप्रिय और प्रभावशाली भाषा बनी हुई थी जिसके चलते मतिराम ने भी अपने काव्य में ब्रजभाषा को अपनाया | भाषा को अभिव्यंजना का प्रबलतम एवं भार्वातिशायी साधन माना जाता है | रीतिकाल में भाषा का अंलकार से चमत्कृत होना आवश्यक ही माना जाता था | समस्त पदावली में भावों की अभिव्यक्ति करने का ब्रजभाषा का विशेष गुण संस्कृत साहित्य में भी प्रचलित था | मतिराम जैसे कवियों ने समस्त पदावली न अपनाकर शब्द विशेष के माध्यम से भावों के सौन्दर्य को प्रकट करने की क्षमता का परिचय दिया है | एक शब्द के प्रयोग से भाव का स्वरूप खुल जाए यह सामर्थ्य रीतिकाल के कवियों ने अपनाया जिनमें मतिराम अग्रणी थे | भाषा का गुण संप्रेषणीयता तो सभी युगों में माना जाता रहा है | मतिराम की भाषा कथ्य को पाठकों तक पहुचाने में सक्षम रही है | इनकी भाषा में लालित्य और स्वाभाविकता का प्रभाव दृष्टिगत होता है | मधुर अक्षरों का प्रयोग मतिराम ने प्राय: सबसे अच्छा किया है | इनके काव्य में भावों की सुकुमारता है | इनकी भाषा में कोमल शब्दावली, मुहावरे, कहावते आदि बड़े सुन्दर रूप में प्रयुक्त हुए हैं | मतिराम के निम्न छंद में विरह के भावों को व्यक्त करती हुई विरहणी कहती है –

"चलत पीय परदेश कौं, बरज सकौं नहिं तोहि |
लै एहों अमरण तो, जियत पा इहो मोहि ||"[3]

यहाँ कितना स्वाभाविक आर्तनाद है | ऐसा विरह विलाप कवियों में कहीं-कहीं ही देखने को मिलता है | यहाँ पर उस समय के समाज में स्त्री की जो स्थिति थी वह भी स्पष्ट हो रही है | वह चाहते हुए भी अपने प्रिय को न तो रोक सकती है और न ही उसके साथ जा सकती है |

रीतिकाल के अन्य कवियों की तरह इनके यहाँ भी प्रकृति संयोग-वियोग में उद्दीपन बनकर उपस्थित हुई है | बसंत के मादक उद्दीप्त प्रभाव का वर्णन मतिराम ने इस प्रकार किया है –

"आयों बसंत रसाल प्रफुल्लित, कोकिल बोलनि कौन सुहाई |
भौरिनि को मतिराम किये गुन, काम प्रसून कमान चढाई ||
रावरो रूप लग्यौ मन में, तन में तिय की झलकी तरुनाई |
धीर धरौ अकुलात कहा, अब तो बलि बात सबै बनि आई ||" [4]

इस तरह के प्रकृति वर्णनों में इन्होंने कालिदास जैसे महान कवि के भाव को अपनाकर भी उसमें एक प्रकार की नविनता उत्पन्न कर दी है | बसंत ऋतु हमेशा से ही प्रेम करने वाली मानी जाती रही है | जिसमें काम भावनाएं अधिक तीव्र हो जाती है जिसके कारण प्रिय से दूर रहना मुश्किल हो जाता है |

'मतिराम ग्रंथावली' की भूमिका में पंडित कृष्ण बिहारी मिश्र ने लिखा है कि "ब्रज भाषा के कवियों में जहाँ तक भाषा सौन्दर्य का सम्बन्ध है वहाँ तक कविवर मतिराम जी से बढकर अच्छी भाषा लिखने में कोई भी कवि सफल नहीं हुआ है | यह कहने में हमें कुछ भी संकोच नहीं है कि सूर, तुलसी, देव, बिहारी और पद्माकर आदि कोई भी कवि भाषा सौन्दर्य में मतिराम को पीछे नहीं छोड़ पाते हैं | यह मानने को हम तैयार हैं की इनमें से भी कई कवियों की भाषा ऐसी है जिससे मतिराम की भाषा अच्छी नहीं कहीं जा सकती | भाषा सौन्दर्य में उनके बराबर कई कवि अवश्य हैं पर उनसे बढकर कोई नहीं है |" [5]

रीतिकाल की मान्यता के अनुसार भाषा में माधुर्य, ओज एवं प्रसाद गुण का समावेश आवश्यक माना जाता था | इसलिए मतिराम ने इन गुणों का अपनी रचनाओं में समावेश किया है | इनकी प्रसिद्ध रचना 'रसराज' श्रृंगार और नायिका भेद का ग्रन्थ है, जिसमें चित्रित नायिका भेद बंधी-बंधाई परिपाटी पर है | यह अपने मृदुल और सुकुमार भावों तथा काव्य सौन्दर्य के रसिक जनों का आज भी कंठ हार बना हुआ है | मतिराम – सरस, ललित एवं सुकुमार रचना के धनी थे | रसराज नाम से ही विदित हो जाता है कि श्रृंगार जो रसों का राजा है उसे निरूपित करने वाला यह ग्रन्थ है | परन्तु मूल और प्रधान रूप से इसमें नायिका-भेद का विस्तार है | मतिराम का काव्य कोमल भावना और कल्पना व्यक्त करता है | उनकी अलंकार योजना अनुभूति को स्पर्श करने वाली है | इनके चित्रण व्यक्ति वस्तु और भाव को सजीव रूप से प्रस्तुत करने की विशेषता रखते हैं | मधुर–स्निग्ध भावावली के वर्णन में मतिराम अद्वितीय है जैसे –

"मोर पंखा मतिराम किरीट में, कंठ बनी बनमाला सुहाई |
मोहन की सुसकानि मनोहर, कुंडल डोलनि में छवि छाई ||
लोचन लोल बिसाल बिलोकिन कौन बिलोकि भयो बस पाई |
वा मुख की मधुराई कहा कहैं, मीठी लगे अंखियन ललचाई ||" [6]

यहाँ स्त्री अपने मन के प्रेम भाव को स्वतंत्र रूप से प्रकट करती है | उसे प्रेम हो गया है जिसके चलते प्रियतम की छवि उसे अत्यंत मनभावक लगती है उसकी मुस्कान मन को हर लेने वाली लगती है और उसकी आँखों का लावण्य भी मीठा लगता है | इसमें पुरुष सौन्दर्य का वर्णन किया गया है | सरल ब्रज भाषा तत्सम, तद्भव, देशी और विदेशी शब्दों की बानगी इनके काव्य में मिलती है | इनके काव्य में पढ़ते समय दृश्य बिम्ब उभरने लगते हैं –

"यो मतिराम भयों हिय में सुख बाल के बालम सौ दृग जोरे |
ज्यों पट मैं अति ही चटकीलो चढ़े रँग तीसरी बार के बोरे ||" [7]

वियोग के बाद प्रेमियों के मिलन का चित्र खीचा गया है यहाँ पर जब बालिका अपने प्रिय को देखती है तो उसके हृदय को बहुत सुख मिलता जब दोनों के नेत्र मिलते है तो उसका रंग उस कपडे की तरह चटकिला हो जाता है जिस पर तीन बार रंग चढ़ा दिया जाता है | नेत्र से नेत्र मिलकर प्रेम उमड़–उमड़कर आने लगता है | यहाँ पर लोक-व्यवहार उजागर हो रहा है |

मतिराम का उद्देश्य वस्तु वर्णन की अपेक्षा भावों को स्पष्ट करना अधिक रहा है | भावों का चित्रण करते समय तो प्राय: वे रेखाओं का ही सहारा लेते हैं जबकि वस्तु चित्रण में उन्होंने यथा संभव रेखाओं और रंग दोनों से ही काम लिया है | उनकी रचनाओं में रेखाचित्रों का बाहुल्य है | रंगों का उपयोग तो वे उसी स्थान पर करते हैं

[2] वही .....पृष्ठ संख्या 193

[3] रीतिकाव्य में श्रृगार-निरूपण : श्रीवास्तव एस आर, पृष्ठ संख्या - 111

[4] मतिराम ग्रंथावली – कृष्ण बिहारी मिश्र, पृष्ठ संख्या - 154

[5] वही ..... पृष्ठ संख्या - 69

[6] रसराज – मतिराम, छन्द संख्या - 26

[7] वही ..... छन्द संख्या – 12

जहाँ वे रेखाएं अपना कार्य करने में असमर्थ रहती है | जब ये नायिका के सौन्दय का वर्णन करते है तब ऐसा कौशल दिखाते है कि पूरे सौन्दर्य का वर्णन भी न करना पड़े और भाव भी प्रकट हो जाए-

"कुंदन को रंगु फीको लगै, झलकै अति अंगन चारु गोराई;
आँखिन मैं अलसानी, चितौनि मैं मंजु बिलासन की सरसाई |
को बिन मोल बिकात नहीं, मतिराम लहै मुसकानि-मिठाई |
ज्यों ज्यों निहारिए नेरे हवै ननैनि, त्यों त्यों खरी निकरै सी निकाई || [8]

भिन्न-भिन्न अंगों का सौन्दर्य वर्णन करने के लिए बहुत सा स्थान चाहिए था, पर 'ज्यों-ज्यों निहारिए नेरे' जैसे पद ने इतने कम शब्दों में सारे शरीर के सौन्दर्य का वर्णन कर दिया है | सौंदर्य का मान ही यही है कि उसकी नूतनता बढती ही जाए |
छंद योजना की दृष्टि से मतिराम का विस्तार परिमित है इन्होंने प्रमुख रूप से तीन छन्दों का प्रयोग किया है:– सवैया, कवित्त और दोहा | शृंगारिक परिवेश में सवैया उनका सर्वाधिक प्रिय छंद है | उसमें भाषा का सहज प्रवाह, भावों की ललित झंकार, कल्पना शक्ति चित्रों की मोहक छटा और ध्वनि का मनोहर रूप देखने को मिलता है | स्त्री के मन को समझने का सामर्थ्य उस समय के ब्रजभाषी कवियों में था | स्त्री पक्ष की शुरुआत कृष्ण काव्य धारा और इन कवियों से ही होती हैं |

"कोऊ नहीं बरजै मतिराम रहो तितही जितही मन भायो |
काहें कौं सौहे हजार करौ, तुम तो कबहूँ अपराध न ठायी
सोवन दीजै, न दीजै हमें दुख, यों ही कहा रसवाद बढायों
मान रहोई नहीं मनमोहन मानिनी होय सो, मानै मनायो ||" [9]

इस छन्द से स्पष्ट होता है की उस समाज में पुरुष बहुगामी होते थे, कई स्त्रियों के साथ अपने प्रेम शाररिक सम्बन्ध रखते थे | जिसके कारण घर में बंद रहने वाली पत्नी अपने दुःख को प्रकट करती है | मतिराम के काव्य में स्त्री विद्रोहों की झलक भी दिखाई देती है | जब पुरुष किसी अन्य स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित करके आता है तो पत्नी अपना विरोध व्यक्त करती है वह चुपचाप सहन नहीं करती और उसे फिर से अपने साथ सम्बन्ध नहीं बनाने देती है | हालाकि वह कुछ समय तक नाराज होने के आलावा और कुछ नहीं कर पाती है क्योकि वह आर्थिक रूप स्वतंत्र नहीं है पति पर ही आश्रित है इसलिए पति से अलग होने का फैसला नहीं ले पाती है परन्तु फिर भी यहाँ अधिकार का क्लेम भी किया गया है जिसके चलते आधुनिकता की झलक दिखाई देती है |
ब्रजभाषा काव्य में कानों को सुख देने वाले शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इसमें अधिकत्तर कवित्त – सवैया जैसे छंद ही रचे गए हैं | उस युग में यमक और अनुप्रास अलंकार को ही रस से पूर्ण माना जाता था | मतिराम की भाषा में इसी नादात्मकता को सर्वत्र सुना जा सकता है। इसमें संगीतात्मकता भी दृष्टिगोचर होती है |

"कुसुम के हार हियो हरति कुसुंभी आंगी, सकै
को बरनि आभा उरज उतंग की | जीवन जरब
महा रूप के गरब गति दन के मद मद
मोकल मतंग की |"

भाषा में विविध प्रकार की शब्दावली का समावेश सहज ही हो जाता है | इस कथन के अनुसार देखा जाए तो मतिराम की सुकुमार एवं सरल ब्रज भाषा में तत्सम, तद्भव, देशी और विदेशी शब्दों की बानगी मिल जाती हैं | मतिराम की भाषा में 'कारिख लगाना', 'लोचनी लौनी सी लगाना', 'उदि-उदि पियत', 'मन ललकत', 'नैन मुसकाना', 'भावरे भरना' , 'उर सालना', 'नैननि आन बसना' आदि अनेक मुहावरे सटीक प्रयुक्त हुए हैं | सौंदर्य-चित्रण में वे इस तरह का प्रयोग करने में सिद्धहस्त है – 'वा मुख की मधुराई कहा कहौ, मीठी लगै अंखियानि लुनाई |"

तत्कालीन कवि रीति के अनुसार इनके काव्य में भी चमत्कार मिलता है | इनकी भाषा सरल होते हुई भी प्रबल वेगवती है | उसमें लक्षण और व्यन्जनाश्रित अलंकारों का प्रयोग अर्थ के सौन्दर्य को प्रकट करता है | आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने कविवर मतिराम की भाषा के सम्बन्ध में कहा है कि – "मतिराम का मार्ग ऋजु है , इसलिए यह कहा जा सकता है कि इनकी रचना को हृदयगम करने में सामान्यत: किसी को कठिनाई नही हो सकती है | शब्द और अर्थ दोनों का मार्ग स्फित और ऋजु होने से इनकी भाषा और भाव संपत्ति सर्वथा ग्राह्य है | एक शब्द के प्रयोग से भाव का स्वरूप खुल जाए | यह विशेषता मतिराम के काव्य की है | जो कविता के इतिहास में प्रगति की सूचक है वह इनकी विशेषता हैं |" [10]
रीतिकाल के कवि कविता की स्वतंत्रता या स्वायत्ता को स्थापित करते हैं, कविता को आजाद करते हैं | भक्तिकाल के समय तक कोई कवि ऐसा नहीं था जो अपने को कवि कहलाना पसंद करता हो वे अपने आपको भक्त मानते हैं | रीतिकाल के कवि के लिए कविता करना उद्देश्य है और राधा – कृष्ण का नाम बहाना है | इस तरह कविता भक्ति से स्वतन्त्र होती है | वह रीतिकाल में स्वतन्त्र कला के रूप में सामने आती है। इस काल में कविता से धार्मिक चेतना का दबाव प्राय: खत्म होने लगा था। इस काल के रचनाकार मूलत: कवि ही हैं। इन्होंने शृंगार के क्षेत्र में मानवीय भावनाओं और राग–विराग को कविता के मुख्य विषय के रूप में स्थापित किया है।
रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि व आचार्य मतिराम का भाषा पर अधिकार है, इन्होंने अपनी काव्य रचना हेतु ब्रज भाषा को अपनाया है | स्त्री के मनोभावों को व्यक्त करते समय भावों के हिसाब से भाषा का प्रयोग किया है, जैसा भाव है वैसी ही भाषा है – गुस्से में छोटे –छोटे वाक्यों का प्रयोग किया है वही जहाँ व्यंग्य है वहाँ लम्बे वाक्यों का प्रयोग किया है | ब्रजभाषा काव्य में इनका महत्वपूर्ण योगदान है |

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य राम चन्द्र शुक्ल
प्रकाशक : प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
संस्करण : सन् 2007
2. मतिराम ग्रन्थवली – संपादक – पं. कृष्णबिहारी मिश्र
प्रकाशक : गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ
चतुर्थ संस्करण : सन् - 1975
3. रीतिकाव्य में श्रृगार-निरूपण : श्रीवास्तव एस आर
4. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डा. बच्चन सिंह
प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
नया संशोधित-परिवर्धिद्त संस्करण : 2008
5. महाकवि मतिरामकृत रसराज – व्याख्याकार और सम्पादक : रामजी मिश्र
प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी
संस्करण : प्रथम संस्करण
6. हिंदी साहित्य का अतीत – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
7. भूषण मतिराम तथा उनके अन्य भाई – डा. किशोरीलाल गुप्त
प्रकाशक : विद्धा–मंदिर, ब्रह्मनाल, वाराणसी प्रथम - संस्करण

[8] रसराज – मतिराम, छन्द (सवैया) संख्या - 6

[9] रसराज – मतिराम, छन्द संख्या - 41

[10] हिंदी साहित्य का अतीत – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र